विषय-सूची

प्रकृतिसमुत्कीर्तनचूलिका

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा।	१
२	शंका-समाधानपूर्वक चूलिका-का अवतार व उसके भेदोंका निरूपण।	,,
३	प्रकृतिसमुत्कीर्तनकी प्रतिज्ञा।	५
४	प्रकृतिसमुत्कीर्तनके भेदोंका निर्देश तथा मूलप्रकृति व उत्तरप्रकृतिका लक्षण।	,,
५	ज्ञानावरणीयका निर्देश तथा आव्रियमाण और आवारक का निरूपण।	६
६	दर्शन व दर्शनावरणीयका लक्षण व दर्शनका ज्ञानसे पृथक्त्वप्ररूपण।	९
७	वेदनीयका निरूपण।	१०
८	मोहनीयका निरूपण।	११
९	आयु, नाम, गोत्र व अन्तराय कर्मोका निरूपण।	१२
१०	ज्ञानावरणीयके पांच भेदोंका निर्देश।	१५
११	आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप व उसके अवग्रहादि भेद-प्रभेदोंका निरूपण।	१६
१२	श्रुतज्ञान और श्रुतज्ञानावर-णीयका लक्षण व श्रुतज्ञानके बीस भेदोंका निरूपण।	२१
१३	अवधिज्ञान और अवधिज्ञाना-वरणका लक्षण तथा अवधि-ज्ञानके तीन भेदोंका निर्देश।	२५
१४	मति-श्रुतज्ञानोंसे अवधि-ज्ञानकी भिन्नता वतला कर उसकी प्रत्यक्षताका निरूपण।	२६
१५	मनःपर्ययज्ञान व उसके भेद तथा अवधि और मनःपर्यय ज्ञानोंका वैशिष्टय।	२८
१६	केवलज्ञान और केवलज्ञाना-वरणीयका स्वरूप एवं केवलीके मतिज्ञानादि चार ज्ञानोंके अभावका निरूपण।	२९
१७	दर्शनावरणीयके नौ भेदोंका एवं दर्शन व उसके भेदोंका निरूपण।	३१
१८	दर्शनके स्वरूपमें भिन्न मतोंका दिग्दर्शन और उनका खण्डन।	३३
१९	सातावेदनीय व असातावेद-नीयका लक्षण, उन दोनोंके अभावमें सुख-दुःखाभावरूप आशंकाका समाधान और सातावेदनीयका जीव-पुद्गल-विपाकित्वनिरूपण।	३५

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२०	मोहनीय कर्मके अट्ठाईस भेदोंका निरूपण, दर्शनमोहनीयका स्वरूप और बन्ध व सत्वकी अपेक्षा उसका वैशिष्टय ।	३७
२१	सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वका निरूपण ।	३९
२२	चारित्रमोहनीयके भेद–प्रभेद व उनके भिन्न भिन्न लक्षण ।	४७
२३	आयुकर्मके भेद व उनका लक्षण ।	४८
२४	नामकर्मकी व्यालीस पिण्डप्रकृतियोंका पृथक् पृथक् लक्षणनिरूपण ।	४९
२५	गति व जाति नामकर्मोंके भेदोंका निरूपण ।	६७
२६	शरीर नामकर्मके भेदोंका निरूपण ।	६८
२७	वन्धनके भेद ।	७०
२८	संघातके भेद ।	,,
२९	संस्थान नामकर्मके भेद व उनके लक्षण ।	७१
३०	अंगोपांग नामकर्मके भेद व उनके लक्षण ।	७२
३१	संहनन नामकर्मके भेद व उनके लक्षण ।	७३
३२	वर्ण, गन्ध, रस, और स्पर्श नामकर्मके भेदोंका निरूपण ।	७४
३३	आनुपूर्वी आदि नामकर्मके भेदोंका निरूपण ।	७६
३४	गोत्र और अन्तराय कर्मके भेदोंका निरूपण ।	७७

स्थानसमुत्कीर्तनचूलिका

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	स्थानसमुत्कीर्तनकी प्रतिज्ञा ।	७९
२	बन्धकस्थानोंके भेद ।	८०
३	ज्ञानावरणीयकी पांच प्रकृतियोंका निर्देश व उनके एक बन्धस्थानका निरूपण ।	,,
४	दर्शनावरणीय कर्मके तीन बन्धस्थानोंका निरूपण ।	८२
५	वेदनीयके एक बन्धस्थाननका निरूपण ।	८७
६	मोहनीय कर्मके दश स्थानोंका निरूपण ।	८८
७	आयुकर्मके बन्धस्थान ।	९९
	नामकर्मके अठ्ठाईस प्रकृतिसम्बन्धी स्थान ।	१०२
९	तिर्यग्गति नामकर्मके पांच स्थान ।	१०४
१०	मनुष्यगति नामकर्मके तीन स्थान ।	११७
११	देवगति नामकर्मके पांच स्थान ।	१२२
१२	गोत्र कर्मके बन्धस्थान ।	१३१
१३	अन्तरायकी पांच प्रकृतियोंका एक बन्धस्थान ।	१३२

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.

प्रथममहादण्डकचूलिका

१	प्रथमसम्यक्त्वके अभिमुख हुए जीवके बध्यमान प्रकृतियोंके कीर्तनकी प्रतिज्ञा।	१३३
२	प्रथमसम्यक्त्वीके द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंका निर्देश।	१३३
३	सम्यक्त्वाभिमुख हुए मिथ्यादृष्टि जीवके प्रकृतियोंके बन्धव्युच्छित्तिक्रमका निरूपण।	१३५

द्वितीयमहादण्डकचूलिका

१	प्रथमसम्यक्त्वाभिमुख देव और नारकीके बध्यमान प्रकृतियोंका निरूपण।	१४०

तृतीयमहादण्डकचूलिका

१	प्रथमसम्यक्त्वाभिमुख सप्तम पृथिवीके नारकी द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंका निर्देश।	१४२

उत्कृष्टस्थितिचूलिका

१	उत्कृष्टस्थितिके कथनकी प्रतिज्ञा।	१४५
२	पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पांच अन्तरायोंकी उत्कृष्ट स्थितिका निरूपण।	१४६
३	उपर्युक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट आबाधा तथा आबाधाकाण्डकोंका निरूपण।	१४८
४	आबाधासे हीन कर्मस्थितिप्रमाण कर्मनिषेकका निरूपण।	१५०
५	उत्कृष्ट स्थितिमें प्रदेशरचनाक्रमको बतलाते हुए गुणहानि आदिका निरूपण।	१५२
६	सातावेदनीय, स्त्रीवेद, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति।	१५८
७	उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट आबाधा।	१५९
८	मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति व आबाधाका प्रमाण।	,,
९	सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्थितिबंध व उसकी आबाधा।	१६१
१०	पुरुषवेदादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उसकी आबाधा।	१६२
११	नपुंसकवेदादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उसकी आबाधा।	१६३
१२	नारकायु व देवायुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उसकी आबाधा।	१६६

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१३	तिर्यगायु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उसकी आबाधा।	१६९
१४	द्वीन्द्रियादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उनके आबाधाप्रमाणको बतलाते हुए इच्छित निषेकोंके भागहारके निकालनेका विधान।	१७२
१५	आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग और तीर्थंकर प्रकृतिके उत्कृष्ट स्थितिबन्धका निरूपण।	१७४
१६	उक्त तीनों प्रकृतियोंके आबाधाकालका प्रमाण।	१७७
१७	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान और वज्रनाराचसंहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ब आबाधा।	"
१८	स्वातिसंस्थान और नाराचसंहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व आबाधा।	१७८
१९	कुब्जकसंस्थान और अर्धनाराचसंहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व आबाधा।	१७९

जघन्यस्थितिचूलिका

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	जघन्यस्थितिके कहनेकी प्रतिज्ञा तथा संक्लेश व विशुद्धिपर विचार।	१८०
२	पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, संज्वलनलोभ एवं पांच अन्तरायोंका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८२
३	पांच दर्शनावरण और असातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८४
४	सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८५
५	मिथ्यात्वका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८६
६	अनन्तानुबन्धी आदि बारह कषायोंका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८७
७	संज्वलन क्रोध, मान और मायाका चघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८८
८	पुरुषवेदका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१८९
९	स्त्रीवेदादिप्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१९०
१०	नारकायु व देवायुका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	१९३
११	तिर्यगायु और मनुष्यायुका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा।	"

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१२	नरकगति आदि प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा ।	१९४
१३	आहारकशरीर आहारक-शरीरांगोपांग और तीर्थंकर प्रकृतिका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा ।	१९७
१४	यश:कीर्ति और उच्च गोत्रके जघन्य स्थितिबन्ध और आबाधाप्रमाणका निरूपण तथा जघन्य व उत्कृष्ट प्रदेश-बन्ध एवं अनुभागबन्धके न कहने रूप शंकाका समाधान ।	१९८
१५	सत्व, उदय और उदीरणाके न कहनेरूप शंकाका समाधान ।	२०१

सम्यक्त्वोत्पत्तिचूलिका

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	सम्यक्त्वप्राप्तिके योग्य कर्म-स्थिति आदिका निर्देश तथा क्षयोपशमादि चार लब्धि-योंका निरूपण ।	२०३
२	सम्यक्त्वप्राप्तिके योग्य जीवका निरूपण ।	२०६
३	सर्वविशुद्धका लक्षण तथा अध:प्रवृत्त करणविशुद्धियोंका निरूपण ।	२१४
४	अपूर्वकरणका निरूपण ।	२२०
५	अनिवृत्तिकरणका निरूपण ।	२२१
६	अध:प्रवृत्तकरणादि विशु-द्धियों द्वारा होनेवाले स्थिति-बन्धापसरणादि कार्य ।	२२२
७	प्रथमसम्यक्त्वको उत्पन्न करनेवाले जीवके द्वारा किये जानेवाले अन्तरकरणका निरूपण ।	२३०
८	मिथ्यात्वके तीन भागोंका निरूपण ।	२३४
९	पच्चीस पदवाला अल्पबहुत्व ।	२३६
१०	दर्शनमोहनीय कर्मके उपशमके योग्य गत्यादिकोंका निरूपण ।	२३८
११	दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके प्रारम्भ योग्य सामग्री ।	२४३
१२	दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके निष्ठापन योग्य गतियोंका निर्देश एवं दर्शनमोहक्षप-ककी विशेष प्ररूपणा ।	२४७
१३	प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरणसे लेकर प्रथमसमयवर्ती कृत-कृत्य वेदक होने तक अनु-भागकाण्डकोत्कीरणकालादि पदोंका अल्पबहुत्व ।	२६३

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१४	सम्यक्त्व प्राप्त करनेवाले जीवके ज्ञानावरणादि सात कर्मोंकी स्थिति ।	२६६
१५	चारित्रको प्राप्त करनेवाले जीवके ज्ञानावरणादि तोन कर्मोंकी स्थिति ।	२६७
१६	संयमासंयम प्राप्तिका विधान ।	२७०
१७	अपूर्वकरणसे लेकर एकान्तानुवृद्धिके अन्तिम समय तक स्थितिबन्धादि पदोंका अल्पबहुत्व ।	२७४
१८	संयमासंयमलब्धिके स्वामी व अल्पबहुत्व ।	२७५
१९	संयमासंयमलब्धिके स्थानोंका निरूपण ।	२७६
२०	संयमासंयमलब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व ।	२७८
२१	सकलचारित्रके तीन भेदोंका निर्देश करते हुए क्षायोपशमिक चारित्रकी प्राप्तिका विधान ।	२८१
२२	संयमलब्धिस्थानोंके तीन भेद व उनका स्वरूप तथा अल्पबहुत्व ।	२८३
२३	औपशमिक चारित्रकी प्राप्तिके विधानमें अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना और दर्शनमोहनीयके उपशमका निरूपण ।	२८८
२४	कषायोपशामनाके विधानमें स्थितिकाण्डकादिकोंका निर्देश व प्रमाण ।	२९२
२५	स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व ।	२९७
२६	मनःपर्ययज्ञानावरणादिकोंका बन्धसे देशघातित्वनिरूपण ।	२९९
२७	बारह कषाय और नौ नोकषायोंके अन्तरकरणका विधान ।	३००
२८	अन्तरकरणके प्रथम समयमें होनेवाले सात करणोंका निरूपण ।	३०२
२९	नपुंसकवेदके उपशमका निरूपण ।	३०३
३०	स्त्रीवेदके उपशमका निरूपण ।	३०५
३१	सात नोकषायोंके उपशमका विधान ।	३०६
३२	तीन प्रकारके क्रोधके उपशमका निरूपण ।	३०८
३३	तीन प्रकारके मानके उपशमका निरूपण ।	३०९

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
३४	तीन प्रकारकी मायाके उपशमका विधान।	३१०
३५	तीन प्रकारके लोभके उपशमविधानमें कृष्टियोंका निरूपण।	३१२
३६	उपशान्तकषायका निरूपण।	३१६
३७	उपशान्तकषायके प्रतिपातका क्रम।	३१७
३८	क्रोधादिके उदयसे उपस्थित पुरुषवेदि आदि उपशामकोंकी विशेषता।	३३२
३९	प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरण उपशामकसे लेकर प्रतिपातावस्थामें अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण होने तक इसकालमें कालसंयुक्त पदोंका अल्पबहुत्व।	३३५
४०	क्षायिक चारित्रकी प्राप्तिके विधानमें स्थितिकाण्डकादिकोंका निरूपण।	३४२
४१	ज्ञानावरणीयादिकोंकी स्थितिका स्थापन।	,,
४२	चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें अधःप्रवृत्तकरणकालादिकी आवश्यकता।	३४३
४३	प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरणका निरूपण।	३४४
४४	अपूर्वकरणके द्वितीयादि समयोंमें किये जानेवाले कार्य।	३४५
४५	प्रथमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरणके आवास।	३४८
४६	अनिवृत्तिकरणके द्वितीयादि समयोंमें किये जानेवाले कार्य एवं ज्ञानावरणादिकोंके स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व।	३४९
४७	स्थितिसत्वका निरूपण।	३५३
४८	आठ कषाय व निद्रानिद्रादिकोंका संक्रमण और मनःपर्ययज्ञानावरणादिकोंका बन्धसे देशघातिकरणविधान।	३५५
४९	चार संज्वलन और नौ नोकषायोंके अन्तरकरणका विधान।	३५७
५०	नपुंसकवेदके संक्रमणका विधान।	३५८
५१	स्त्रीवेदके संक्रमणका विधान।	३६०
५२	सात नोकषायोंके संक्रमणका निरूपण।	३६१
५३	अश्वकरणकालमें अपूर्वस्पर्द्धकोंका निरूपण।	३६४
५४	कृष्टिकरणकालमें क्रोधादिकृष्टियोंका निर्माण, अल्पबहुत्व और उनमें दीयमान प्रदेशाग्रका निरूपण।	३७४

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
५५	कृष्किटवेदकालमें कृष्टियोंका बंध, उदय, अपूर्वकृष्टियोंका निर्माण, प्रदेशाग्रका संक्रमण और सूक्ष्मकृष्टियोंके निर्माणादिका निरूपण।	३८२
५६	क्रोधादिके उदयसे उपस्थित पुरुषवेदी आदि क्षपकोंकी विशेषता।	४०७
५७	क्षीणकषाय क्षपकका निरूपण।	४११
५८	सयोगकेवलीके निरूपणमें दण्ड-कपाटादि समुद्घातोंका स्वरूप।	४१२
५९	योगनिरोधकरणमें अपूर्वस्पर्धक और कृष्टियोंके करनेका विधान।	४१४
६०	उपान्त्य समयमें व्युच्छिन्न होनेवाली तिहत्तर प्रकृतियां।	४१७
६१	अन्त्य समयमें व्युच्छिन्न होनेवाली बारह प्रकृतियां।	४१७

गति-आगतिचूलिका

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	नरकगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पादनकी सामग्री।	४१८
२	तिर्यग्गतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री-	४२४
३	मनुष्यगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री।	४२८
४	देवगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री।	४३१
५	नरकगतिमें प्रवेश और निर्गमनके गुणस्थानोंका निरूपण।	४३७
६	तिर्यग्गतिमें प्रवेश और निर्गमनके गुणस्थान।	४४०
७	पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती, मनुष्यिनी, और भवनवासी आदि देवोंके प्रवेश व निर्गमनके गुणस्थान।	४४२
८	मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और सौधर्मादि नवग्रैवेयक विमानवासी देवोंके प्रवेश व निर्गमनके गुणस्थान।	४४३
९	अनुदिशादि सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंके प्रवेश व निर्गमनके गुणस्थान।	४४६
१०	मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंकी आगतिका निरूपण।	४४७
११	सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी आगति।	४५०
१२	सम्यग्दृष्टि नारकियोंकी आगति।	४५१

क्रम. नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१३	सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी आगति ।	४५२
१४	सप्तम पृथिवीके सासादन-सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंकी आगति ।	४५४
१५	तिर्यंच संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त कर्मभूमिजोंकी गति ।	४५४
१६	पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंज्ञी पर्याप्तोंकी गति ।	४५५
१७	पंचेन्द्रिय तिर्यंच संज्ञी व असंज्ञी आदिकोंकी गति ।	४५७
१८	तेजस्कायिक व वायुकायिक जीवोंकी गति ।	४५८
१९	तिर्यंच सासादनसम्यदृष्टि कर्मभूमिजोंकी गति ।	४५८
२०	तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी गति ।	४६३
२१	तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी गति ।	४६४
२२	तिर्यंच मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति ।	४६६
२३	तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति ।	४६७
२४	मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिजोंकी गति ।	४६८
२५	अपर्याप्त मनुष्योंकी गति ।	४६९
२६	मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी गति ।	४७०
२७	मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि कर्मभूमिजोंकी गति ।	४७३
२८	मनुष्य मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति ।	४७६
२९	मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति ।	४७७
३०	देव मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यदृष्टियोंकी आगति ।	४७७
३१	देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टियोंकी आगति ।	४८०
३२	भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंकी आगति ।	४८१
३३	सनत्कुमारप्रभृति शतारसहस्रार कल्पवासी देवोंकी आगति ।	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
३४	आनतादि नवग्रैवेयकविमानवासी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंकी आगति ।	४८२
३५	अनुदिशादि सर्वार्थसिद्धिविमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंकी आगति ।	४८३
३६	सप्तम पृथिवीके नारकियोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४८४
३७	छठी पृथिवीके नारकियोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४८५
३८	पंचम पृथिवीके नारकियोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४८७
३९	चतुर्थ पृथिवीके नारकियोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति एवं मोक्षका स्वरूप दिखलाते हुए कपिल, नैयायिक, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसक और तार्किकोंके मतोंका निराकरण ।	४८८
४०	तीन उपरिम पृथिवीके नारकियोंकी आगति और गुणप्राप्ति ।	४९१
४१	तिर्यंच और मनुष्योंकी गति एवं गुणोंकी प्राप्ति ।	४९२
४२	देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४९४
४३	भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देव-देवियों तथा सौधर्म–ईशानकल्पवासिनी देवियोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४९५
४४	बौद्धों द्वारा माना हुआ मोक्षस्वरूप एवं उसका निरसन ।	४९७
४५	सौधर्मादि सहस्रारकल्पवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	”
४७	आनतादि नवग्रैवेयकविमानवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	४९८
४७	अनुदिशादि अपराजित विमामवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ।	”
४८	सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति तथा सिद्धोंमें बुद्धिके अभावादिको माननेवाले मतोंका निरसन ।	५००